

- भक्तिमुक्तावली (भ<sup>०</sup> + मु<sup>०</sup>) f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 826.  
 भक्तियोग (भ<sup>०</sup> + योग) m. *Hingebung, gläubige Liebe* Bhāg. P. 1, 7, 4.  
 6. Verz. d. B. H. 125 (XIII). Verz. d. Oxf. H. 17, b, 32. 28. 74, b, 45.  
 भक्तिरत्नावली (भ<sup>०</sup> + र<sup>०</sup>) f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1323.  
 Verz. d. Oxf. H. No. 90. fg. Verz. d. Tüb. H. 15.  
 भक्तिरस (भ<sup>०</sup> + रस) m. *das Gefühl der Hingebung, der gläubigen Liebe*  
 KATHAS. 34, 12.  
 भक्तिरसामृतसिन्धु (भ<sup>०</sup> + अमृत-सि<sup>०</sup>) Titel einer Schrift HALL 144.  
 citirt im ÇKDR. u. अनुभूतिभय, भक्ति und भक्तिरस.  
 भक्तिरसायन (भ<sup>०</sup> + र<sup>०</sup>) n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 38, b,  
 10. BURN. in der Einl. zu Bhāg. P. I, LXV. — Vgl. भगवद्भक्तिरसायन.  
 भक्तिराम (भ<sup>०</sup> + राम) m. *Vorliebe zu* (loc.) MBH. 13, 7211.  
 भक्तिल (von भक्ति) adj. *anhänglich*, von Pferden ÇABDĀ. im ÇKDR.  
 भक्तिवंस s. भक्तिवंस.  
 भक्तिवर्धनी (भ<sup>०</sup> + व<sup>०</sup>) f. Titel einer Schrift HALL 148.  
 भक्तिवाद (भ<sup>०</sup> + वाद) m. *Ergebenheitserklärung, Versicherung der*  
*Zuneigung* MBH. 5, 4235.  
 भक्तिशत (भ<sup>०</sup> + शत) n. Titel einer Schrift HALL 119.  
 भक्तिसिद्धान्त (भ<sup>०</sup> + सि<sup>०</sup>) m. Titel einer Schrift WILSON, Sel. Works  
 1, 167. HALL 149. °विवृति f. desgl. 144.  
 भक्तिमुद्योदय (भ<sup>०</sup>-मुधा + उ<sup>०</sup>) m. Titel des ersten Theiles im Nāra-  
 dījapurāṇa Verz. d. Oxf. H. 83, b, 15.  
 भक्तिमूत्र (भ<sup>०</sup> + मू<sup>०</sup>) n. Bez. des Sūtra des Çāṇḍīlīja HALL 143.  
 Verz. d. Tüb. H. 16. ÇKDR. u. शाण्डिल्य.  
 भक्तिहंस (भ<sup>०</sup> + हंस) Titel einer Schrift HALL 130.  
 भक्तिहेतुनिर्णय (भ<sup>०</sup>-हेतु + नि<sup>०</sup>) m. Titel einer Schrift HALL 132.  
 भक्तादेशक (भक्त + उ<sup>०</sup>) m. nom. ag. *Bestimmer der Speisen*, Bez. eines  
 best. klösterlichen Beamten VJUP. 210.  
 भक्तापसाधक (भक्त + उप<sup>०</sup>) m. *Speisebereiter, Koch* R. GONR. 2, 90, 25.  
 भक्त्युपक्रम (भ<sup>०</sup> + उप<sup>०</sup>) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H.  
 101, b, 10.  
 भन् भनयति Dhātup. 32, 22. भनयामास. भनयिष्यति; bisweilen auch  
 med.; in der späteren Sprache hier und da auch भनति, °ते Dhātup.  
 21, 27. partic. pass. भनितुः *geniessen, verzehren, fressen*; in der älteren  
 Sprache gewöhnlich von Flüssigkeiten, seltener von festen Speisen  
 (mit acc. oder partitivem gen.); in der späteren Sprache nur ausnahms-  
 weise von Flüssigkeiten (nach PAR. zu P. 7, 3, 69 nur von festen Spei-  
 sen): अकृमय्य ब्राल्शो अभनयम् RV. 10, 167, 3. AV. 2, 33, 1. (अंशुम्) यम-  
 नितमन्तिता भनयति 7, 81, 6. यत्रादित्या मयु भनयति 18, 4, 3. VS. 8, 12.  
 37. भनो भन्यमाणः (सोमः) 58. 19, 31. 20, 35. घर्मस्य AIT. Br. 1, 22, 2, 22.  
 3, 5, 29, 32. वषट्कर्ता प्रथमः सर्वभक्षान्नभनयति 32. उपाह परितेणैव प्राशि-  
 तद्वयमाग्रेति नास्य प्रत्यन्नं भनितो भवति 7, 26, 31. ÇAT. Br. 1, 6, 2, 7. 8.  
 पूर्वयुरभिप्रावति प्रातर्भनयिष्यतः 2, 4, 4, 15. तस्मात्तत्र नाश्नति न भन-  
 यति 3, 6, 2, 23. 4, 4, 2, 11. 12, 8, 2, 30. सोम एवास्य रात्रा भनितो भवति  
 1, 3, 2, 21. धाना न दद्विः खादेयुः प्राणैरेव भनयति 4, 4, 2, 11. प्राणभ-  
 नान् KĀTJ. ÇR. 10, 8, 5. प्राणभनं (absol.) भनयित्वा ÇĀṆKH. ÇR. 16, 17, 10.  
 प्राणभनं सर्वत्र भनान्नभनयेत् LĀTJ. 8, 8, 2. KĀTJ. ÇR. 19, 5, 9, 3, 15. दधि-  
 घर्मस्य LĀTJ. 2, 7, 10, 11, 22. अन्नतधानाः Gobh. 3, 3, 5. नीरैर्दन्पुरोडाश-

- रसान् KAUC. 7, 10. धूमम् 82. उष्मभनम् 37, 89. अभनित (यात्र) ÇAT. Br. 4.  
 3, 2, 21. 4, 4, 8. KĀTJ. ÇR. 10, 6, 2. — ब्रालं भनयतः Anō. 3, 16. नात्सङ्गे  
 भनयेद्दद्यान् M. 4, 63. न भनयेदेकचरान्ज्ञातांश्च मृगद्विज्ञान् 8, 17. प्रोक्तं  
 भनयेन्मोसम् 27, 50, 55, 11, 92, 114. JĀṬN. 2, 160. Hip. 2, 14. त्वया भनयता  
 नरान् 4, 10. MBH. 1, 2842. 5571. 5583. 2, 1467. 3, 421. 2420. 8738. धुवं  
 युधि कृतास्तेन भनयिष्याम पोषुकान् 5, 640. 5437. R. 2, 52, 100. 3, 16, 26.  
 Spr. 4430. KATHAS. 37, 58. PĀṆKĀT. 34, 25, 33, 24. मरुतसदृशानि शय्या-  
 प्राणि भनयन् 68, 24. 70, 20. 98, 10. Hit. 17, 16. 18, 10. 27, 13. 18. Ver.  
 in LA. (II) 2, 8. 10, 21. यानि चैवंप्रकाराणि कालाद्भिर्न भनयेत् *verzeh-*  
*ren, zu Nichte machen* M. 8, 251. (सचिवाः) भनयति महीपतिम् *aufessen*  
 so v. a. *ausaugen* KĀM. NĪTIS. 4, 12. यदि कोकतरो कोषो स्त्रीधनं भ-  
 नयेत् *verzehren, verbrauchen* KĀTJ. in DĀJABH. 125, 12. 14. भनयतां मु-  
 द्यताम् SUND. 2, 32. केचित्तत्र नरव्याघ्रैर्भनयन् वृभुक्तिः MBH. 1, 2841.  
 PĀṆKĀT. 62, 24. यथा क्षामिषमाकाशे पतिभिः श्यापैर्भुवि । भनयते सलिले  
 मत्स्यैस्तथा सर्वत्र वितवान् ॥ Spr. 2329. पदे पदे भन्यमाणाः श्वभिः *ge-*  
*bissen* KATHAS. 4, 69. पिपीलिकिरिक्किरि दिष्टा लोकोपतापनः । पापेन  
 पापो ऽभति Bhāg. P. 7, 7, 3. भनित P. 6, 4, 52. Sch. AK. 3, 2, 60. MBH.  
 1, 5571. फलानि 3, 1739. 8740. बालेन यथा स्यादन्नितं विषम् Daç. 1, 11.  
 R. 3, 49, 50. Hit. 41, 20, 30, 20, 1, 79. Ver. in LA. (II) 9, 14. कोश *Sehat*;  
 KĀM. NĪTIS. 13, 66. *gekaut* von einer fehlerhaften Aussprache der Worte  
 Ind. St. 4, 268, 3. — med.: तिराङ्ङ्यानेव भनयाद्यै ÇAT. Br. 11, 5, 5, 11.  
 सर्वान्नभनयिष्ये MBH. 3, 409. R. 5, 25, 29. भनयस्व 1, 9, 34. MĀRK. P. 23, 67.  
 दीपो भनयते धातम् Spr. 4186. — भनतु Einschub. in Åçv. Gauh. S. 47  
 bei St. भनसि R. 5, 36, 15. भनति Spr. 276. 615. भन R. 3, 16, 25. भनेत्  
 bei St. भनसि R. 5, 36, 15. भनति Spr. 276. 615. भन R. 3, 16, 25. भनेत्  
 PĀṆKĀT. 1, 4, 71. अभनन् in der Bed. des condit. (अभनयन् v. l.) Spr. 2611.  
 st. भनयति R. 2, 33, 11 SCHL. hat die ed. Bomb. भनयति. भने R. 5, 56, 10.  
 भनते (ed. Bomb. भनयताम्) R. SCHL. 2, 91, 50. भनेत Spr. 1708. भन-  
 माणा PĀṆKĀT. 9, 6. भनितुम् 62, 63. Hit. 18, 10, v. l. für भनयितुम्.  
 — caus. भनयति Jmd (instr.) *Etwas* (acc.) *essen lassen* P. 1, 4, 52.  
 Vārtt. 8. भनयति पिण्डो देवदत्तेन, aber भनयति बलीवर्दान्वयान् (weil  
 hier das Verbum द्विसार्थ sein soll) Sch. Vop. 3, 5.  
 — desid. ein Verlangen haben zu verzehren: विभनयिषता मांसं पु-  
 ष्माकम् MBH. 1, 5951. विभनयिषतो (चिखादिषतो ed. Bomb.) मांसानि  
 7, 205. — Vgl. विभनयिषु.  
 — व्यत्र zwischen *Etwas* (acc.) *hinein essen*: यत्नवनानि व्यवभनयेयुः  
 PĀṆKĀT. Br. 18, 3, 17.  
 — उप, partic. उपभनित *verzehrt* Suçr. 2, 340, 14.  
 — परि 1) Jmd *Etwas* wegtrinken, Jmd um den Genuss bringen: प-  
 रस्याग्रिषु येन सोमो भनितः तेन स्वाग्रयः परिभनिताः पितरश्च Comm. zu  
 LĀTJ. 3, 2, 1. कथं तत्रापरिभनितो भवति (सोमः) ÇĀṆKH. Br. 12, 5. — 2)  
*verzehren, aufzehren*: अत्यावशेषो ऽपि क्रतो महात्मा परीरभतेः परि-  
 भनयद्भिः MBH. 11, 615. हृते नस्तत्तवस्तात कालेन परिभनिताः 1, 1837.  
 वनं तत्परिभन्यमाणम् (कपिभिः) R. 5, 60, 19. — Vgl. परिभनण.  
 — प्रति *neben oder in Unterschied von einem Andern geniessen*: अथैतद-  
 तुयात्रमानस्येण यप्रदूतीरो भनयति यप्रगध्वः प्रतिभनयेत् Åçv. ÇR. 3, 8, 6.  
 — सम् *zusammen geniessen* Åçv. ÇR. 3, 6. *verzehren*: एनम् संभन्य  
 त्रयिष्यामि यथागस्त्यो महासुरम् MBH. 3, 422. 7, 8013. 12, 1645. 10447.  
 R. 6, 38, 14. ATHARVAÇR. Up. bei Muir, ST. IV, 299, 27. VP. ebend. 32, 2.